International Journal of Education and Science Research Review
February- 2020, Volume-7, Issue-1 ISSN 2348-6457

भाषा और संचार का महत्व एवं उपयोगिता

डॉ. शिवम् चतुर्वेदी
प्रोफेसर और विभागाध्यक्ष
हिन्दी और पत्रकारिता एवं जनसंचार
अरुणाचल यूनिवर्सिटी ऑफ स्टडीज
नाम्साई, अरुणाचल प्रदेश

मनुष्य के सभ्य समाज के विकास में भाषा और संचार का महत्वपूर्ण स्थान है। बिना भाषा आर संचार के हम सभ्य समाज की परिकल्पना नहीं कर सकते। भाषा और संचार के विकास के साथ–साथ मानव सभ्यता और संस्कृति का विकास होता गया। मनुष्य का उठना, बैठना, चलना, खाना .पीना, सोना, जागना, पढ़ना, लिखना और बोलना आदि जीवन की सभी गतिविधियाँ भाषा एवं सचार से जुड़ी हुयी है। इसलिए मनुष्य को भाषा एवं बोली पर अच्छी पकड़ बनाने की आवश्यकता होती है। संचार स्थापित करने में भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। कुशल संचार स्थापित करने के लिए ही मनुष्य ने भाषा की उत्पत्ति किया, जिससे वह एक दूसरे से विचारों का आदान–प्रदान कर सके।

भाषा 'भाष' धातु से बना है जिसका अर्थ है बोलना या कहना। संसार के सभी प्राणी बोलते है, पर सभी के बोलने को भाषा नहीं कहा जा सकता बल्कि मनुष्य के द्वारा जो सार्थक ध्वनि समूह का प्रयोग किया जाता है, उसे ही हम भाषा कहते है। पशु पक्षियों की भाषा को भाषा वैज्ञानिक भाषा नहीं मानते। भाषा के माध्यम से मनुष्य अपने भावों एवं विचारों का आदान करता है। किसी विषय पर अपना विचार अभिव्यक्त करता है।

भाषा के माध्यम से मनुष्य भावों एवं विचारों की अभिव्यक्ति करता है। भाषा वह साधन है जिससे मनुष्य विषय एवं तथ्यों को गति प्रदान करता है। भाषा सम्प्रेषण का सशक्त माध्यम है। भाषा के माध्यम से ही मनुष्य एक–दूसरे को समझता है, विचार विनिमय करता है, सोचता है, विचार करता है, बोलता और लिखता है। परिवार,समाज एवं देश को जोड़ता है। राष्ट्रोय एवं अतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का निर्धारण भाषा ही करता है। भाषा की हर प्रकार की प्रयुक्ति एवं गतिविधियाँ संचार है।

"भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार दूसरों पर भलीभांति प्रकट कर सकता है और दूसरों के विचार आप स्पष्टतया समझ सकते है।" **–डॉ. कामता प्रसाद गुरु**

"हम अपने मन के भाव प्रकट करने के लिए जिन–जिन सांकेतिक ध्वनियों का उच्चारण करते है, उन्हें भाषा कहते है।" **–दुनीचंद**

"A Language articulate limited organized sound employed in expression."- - **Croche**

"Language may define as the expression of thought by means of speech of sound" –

"A Language is a system of arbitrary vocal symbols by means of which a group of society cooperates."- **Blockantreger**

"Language may define as an arbitrary system of vocal symbols by means of which human beings as member of social group and participants in culture interact a communication."

भाषा के लक्षण–

भाषा के निम्न लक्षण है–

- भाषा ध्वनि संकेतों की व्यवस्था है।

- भाषा विचार विनिमय का माध्यम है।
- भाषा उच्चारण उपयोगी अवयवों से निःसृत ध्वनि समष्टि है।
- भाषा में प्रयुक्त ध्वनि संकेत सार्थक होते है।

भाषा की प्रकृति या विशेषताएं–

- भाषा सामाजिक सम्पत्ति है।
- भाषा पैतृक सम्पत्ति नहीं है।
- भाषा व्यक्तिगत सम्पत्ति नहीं है।
- भाषा अर्जित सम्पत्ति है।
- भाषा व्यवहार अनुकरण द्वारा अर्जित की जाती है।
- भाषा का आधार सामाजिक स्तर पर आधारित होती है।
- भाषा सर्वव्यापक है।
- भाषा सतत प्रवाहमयी है।
- भाषा सम्प्रेषण मूलतः वाचिक है
- भाषा चिरपरिवर्तनशील है।
- भाषा का प्रारम्भिक रूप उच्चरित होता है।
- भाषा का आरम्भ वाक्य से हुआ है।
- भाषा मानकीकरण पर आधारित होती है।
- भाषा संयोगावस्था से वियोगावस्था की ओर बढ़ती है।
- भाषा का अन्तिम रूप नहीं है।
- भाषा का प्रवाह कठीन से सरलता की ओर होता है।
- भाषा नैसर्गिक क्रिया है।
- भाषा की नैसर्गिक क्रिया है।

भाषा का प्रयोग मनुष्य आदिम काल से करता चला आ रहा है। शारीरिक भाषा से मौखिक भाषा तक पहुँचने की प्रक्रिया काफी लम्बी रही है। भाषा की उपयोगिता को मनुष्य हजारों वर्ष पूर्व पहचान लिया था। इसीलिए मनुष्य भाषा के विकास के लिए शतत कार्य करता रहा है। विश्व में सभी भाषाओं का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। अलग–अलग प्रकृति होने के बावजूद भी सभी भाषाओँ का समान रूप से महत्व रहा है। भाषा भावों एवं विचारों के आदान–प्रदान का माध्यम है। मनुष्य के सभ्य समाज के निर्माण में भाषा महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है। पारिवारिक एवं सामाजिक विकास में भाषा महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है। प्रत्येक व्यक्ति के सर्वांगीण विकास का माध्यम भाषा ही होती है। क्रोध, ईर्ष्या प्रेम, घृणा, श्रद्धा, क्षोभ, मद, मोह, आदि मनः स्थिति को भाषा के माध्यम से ही मनुष्य अभिव्यक्ति करता है। भाषा का अत्यधिक उपयोग भाव सम्प्रेषण हेतु होता है। प्रत्तेक स्तर के सम्बन्धों का विकास भाषा के माध्यम से ही होता है। विचारों के सम्प्रेषण का माध्यम भाषा ही होता है। बिना भाषा के हम एक सभ्य समाज की परिकल्पना ही नहीं कर सकते। स्थानीय सम्बन्धों के साथ–साथ राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के विकास में भाषा महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती है। पठन–पाठन, शिक्षा–दीक्षा, साहित्य सर्जन, मनोरंजन, समाज–निर्माण आदि भाषा के माध्यम से ही सम्भव हो पाता है।

भाषा का लक्ष्य विचारों का सम्प्रेषण या आदान–प्रदान है। भाषा सम्प्रेषण में वक्ता, श्रोता तथा सन्देश काफो महत्वपूर्ण होते है। संचार प्रक्रिया में सम्प्रेषक, सन्देश, माध्यम, संकेतिकरण, विसंकेतिकरण, श्रोता एवं प्रतिपुष्टि आदि महत्वपूर्ण तत्व है। संचार प्रक्रिया में सम्प्रेषक जो सन्देश श्रोता तक जो सन्देश पहुँचाना चाहता है, पहले वह उसका कोडीकरण करता है, श्रोता उस सन्देह को गहण करने के लिए विकोडिकरण करता है, जो कोड की समानता के आधार पर ही सम्भव है। सन्देश ग्रहण करने में सन्दर्भ महत्वपूर्ण होता है। वक्ता और श्रोता का

विचार–विमर्श उनका उनके बाह्य जगत और आन्तरिक जगत से सम्बन्ध होता है। विषय–वस्तु को समझने के लिए मानसिक धरातल पर वक्ता और श्रोता के मध्य निरन्तर सम्बन्ध बना रहना आवश्यक है। सम्बन्ध बनाये रखने का कार्य चौनल या सरणी द्वारा सम्पन्न किया जाता है।

ईश्वर ने मनुष्य को वाणी और बुद्धि दी। मनुष्य ने वाणी और बुद्धि के संयोग से भाषा का अविष्कार किया और हम भाषा के माध्यम स अपने मन की बात एक दूसरे से करने लगे। विचारों के आदान–प्रदान में गाम्भिर्यता आयी तथा एक मानक भाषा का विकास हुआ। जिसमें शब्दों का एक मत्वपूर्ण स्थान है। शब्दों को एक निश्चित अर्थ में बांधा गया। निश्चित अर्थ निर्धारित किया गया।

सम्प्रेषण का सबसे प्रभावपर्ण साधन संवाद तथा भाषण कौशल है। भाषण कौशल में वक्ता के बोलने की क्षमता दिखाई पड़ती है। संचार मनुष्य के जीवन में बहुत ही महत्वपूर्ण है। मनुष्य के जीवन में संचार निपुणता परमावश्यक है। संचार निपुणता में व्यक्ति का ज्ञान एवं व्यक्तित्व झलकता है, जिसमे भाषा काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसके माध्यम से भावों एवं विचारों का सहज अभिव्यक्ति तो सम्भव होता ही है, अन्य भाषा कौशल के विकास में भी सहायता मिलती है।

संचार निपुणता व्यक्ति में ऐसी क्षमता उत्पन्न करनी है जिससे वह अपने भावों एवं विचारों को सहज स्पष्ट और प्रभावशाली रूप में इस प्रकार व्यक्त करता है कि श्रोता उसे यथातथ्य रूप में ग्रहण कर प्रभावित हो सके। मातृ–भाषा भाषी में भाषण कौशल स्वयं आ जाता है। परन्तु अन्य भाषा–भाषी को इसे प्रयासपूर्वक सिखना पड़ता है।इसके लिए प्रशिक्षक को विशेष रूप से पाठ्यक्रम का निर्माण करना पड़ता है। भाषण–कौशल में भाषा ध्वनियों के उच्चारण, अनुतान, बलाघात, संगम आदि की आदत, सम्बन्धित भाषा की प्रकृति के अनुसार डालनी पड़ती है क्योकी प्रत्येक भाषा की अपनी अलग–अलग प्रकृति होती है। भाषा कौशल में भाषा के सभी अवयवों पर व्यक्ति का अधिकार हो यह आवश्यक है तथा इसका प्रयास किया जाता है। व्यक्ति को भाषा की ध्वनि, शब्द, रूप, पद, वाक्य, उपवाक्य आदि सभी स्तरों पर समान अधिकार प्राप्त करना पड़ता है। यदि व्यक्ति लेखन तथा वाचन में प्रवीण है परन्तु भाषण कौशल में पारंगत नहीं है तो उसे सफल व्यक्ति नहीं माना जा सकता तथा उसके पूर्ण व्यक्तित्व का विकास नहीं माना जाता। भाषण में यह दक्षता निरन्तर अभ्यास एवं प्रयास से ही आती है। भाषा कौशल भाषा रूपों के सामान्य प्रयोग से आगे बढ़कर सहज मौखिक अभिव्यक्ति भी है।

भावों की अभिव्यक्ति और विचार–विनिमय भाषा के प्रमुख कार्य है। विचार–विनिमय का सबसे सशक्त माध्यम मौखिक अभिव्यक्ति है। उतना किसी अन्य भाषायी कौशल में नहीं है। मनोभावों की समग्रता में अभिव्यक्ति भी इसी कौशल पर निर्भर करती है। क्योंकि इसमें मुखमुद्रा, अनुतान, बलाघात, संहिता के साथ ही भाषा की शाब्दि, आर्थी और व्याकरणिक सरंचना का भी महत्व है। शब्द भण्डार की समृद्धि महत्वपूर्ण होती है। सक्रिय शब्दावली और निष्क्रिय शब्दावली दोनों का ही ज्ञान व्यक्ति के लिए अनिवार्य है। शब्दों का महत्व तभी है जब व्यक्ति उनके अर्थों और छवियों से भी परिचित हो। जैसे व्यक्ति को दवू तथा अमूल्य और बहुमूल्य के अर्थ और सन्दर्भ का भी ज्ञान होना चाहिए। अभिधा के साथ ही लक्षण और व्यंजना शब्द शक्ति का ज्ञान भी उसके लिए आवश्यक है।

संचार प्रक्रिया में लेखन कौशल भी महत्वपूर्ण पहलू है। लेखन के माध्यम से विचारों, भावों, मान्यताओं, ज्ञान आदि को स्थायित्व मिलता है। इससे एक पीढ़ी का ज्ञान भविष्य में दूसरी पीढ़ी तक उसी रूप में स्थानान्तरित किया जाता है। लेखन के माध्यम से ज्ञान संपदा को सरंक्षित करके रखा जाता है। जिससे दूसरी पीढ़ी उसका ज्ञान अर्जन कर पाता है। शोध तथा प्रगति में लेखन सहायक होता है। मनुष्य लेखन के माध्यम से ही भावों तथा विचारों को लिपिबद्ध कर अभिव्यक्त करता है। लेखन व्यक्ति को अमरत्व प्रदान करता है। कालिदास, सूरदास, तुलसीदास, कबीर, जायसी आदि लेखन के कारण ही अमरत्व को प्राप्त हुये। लेखन के माध्यम से किसी भी विषयवस्तु को भूमंडलीय स्तर पर विस्तारित किया जा सकता है। भाषा और संस्कृति का सहज और शाश्वत सम्बन्ध है। लेखन के माध्यम से ही देशों की संस्कृति पुष्पित, पल्लवित और संवर्धित होती है। एक देश व समाज की संस्कृति दूसरे देश व समाज की संस्कृति को प्रभावित करती है और उससे प्रभावित होती है। रेडियों और दूरदर्शन जैसे माध्यम जो हमें मौखिक प्रतोत होती है, वे वास्तव में सर्जनात्मक लेखन पर ही आधारित है। इस

प्रकार लेखन–कौशल व्यक्ति–व्यक्ति, व्यक्ति–समाज, समाज–समाज को जोड़ने के व्यापक कार्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

भाषा में संचार का महत्वपूर्ण स्थान है। संचार का अर्थ ही होता है–बोलना, कहना, बताना, समझाना तथा एक जगह से दूसरे जगह जाना ही संचार है। गति ही जीवन है और जड़ता ही मृत्यु है। संचार में मनुष्य के द्वारा अपने भावों एवं विचारों को अभिव्यक्त किया जाता है। अंग्रेजी में संचार को ब्वउउनदपबंजपवद कहते है जो लैटिन भाषा के 'बवउउनदपे'से बना है, जिसका तात्पर्य है किसी विषय या वस्तु का सबके लिए समान रूप से साझा करना। संचार के माध्यम से एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से विचारों एवं मनोभावनाओ का आदान–प्रदान करता है। संचार के माध्यम से व्यक्ति एक दूसरे को प्रभावित करता है। सम्प्रेषण के वे सभी रूप संचार है। भाषा के माध्यम से मनुष्य अपनी बात कहता है, बताता है और समझाता है। इस प्रकार भाषा संचार का एक माध्यम है। जिसके माध्यम से मनुष्य अपनी भावों की अभिव्यक्ति करता है। मानव अतीतकाल से ही मौखिक (टमतइंस) और अमौखिक (छवद.अमतइंस) संचार करता आ रहा है। इन संचार के तरीको में भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसलिए भाषा और संचार एक सिक्के के दो पहलू है। संचार स्थापित होगा तो भाषा का प्रयोग अवश्य होगा तथा भाषा का प्रयोग होगा संचार प्रक्रिया होगी।

संचार का मानव जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका है। एक सभ्य समाज के निर्माण में संचार अहम योगदान प्रदान करता है। मनुष्य की सभ्यता के विकास में भाषा एवं संचार साथ–साथ योगदान देते रहे है। जैसे–जैसे सभ्यता और संस्कृति का विकास होता गया, उसी प्रकार संचार के स्वरूप में भी विकास होता गया–संचार के मुख्यतः चार स्वरूप निर्धारित किये गये है–

- अन्तरावैयक्तिक संचार (Intra Personal Communication)
- अन्तरवैयक्तिक संचार (Inter Personal Commun)
- समूह संचार (Group Communication)
- जनसंचार (Mass Communication)

जनसंचार को निम्नलिखित भागों में बाँटा गया है–

- परम्परागत जनसंचार माध्यम (Traditional Media)
- आधुनिक जनसंचार माध्यम (Modern Media)

आधुनिक जनसंचार माध्यम को निम्न भागों में बाँटा गया है–

- प्रिन्ट मीडिया (Print Media)
- इलेक्ट्रानिक मीडिया
- रेडियो टेलीविजन
- फिल्म
- इन्टरेक्टिव मीडिया–इंटरनेट, मोबाइल, पजर, फैक्स, कंप्यूटर आदि।

भाषा में प्रवीणता और संचार में निपुणता मनुष्य के जीवन में पूर्णता एवं परिपक्वता लाता है। भाषा एवं संचार में पारंगत व्यक्ति अपने आप को लोगों के सामने अच्छी तरह प्रस्तुत कर सकता है। एक अच्छे संचार के लिए भाषा में प्रवीण होना चाहिए। यदि व्यक्ति भाषा में प्रवीण नहीं है तो वह अपनी बातों को अच्छी तरह से प्रस्तुत नहीं कर सकता है। भारतेन्दु ने कविवचन सुधा पत्रिका में भाषा सम्बन्धी आदर्श पर कहा है कि–

निज भाषा उन्नति अहे, सब भाषा के मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटे न हिय के सूल।।

भाषा का प्रयोग करना और किस प्रकार से करना यह काफी महत्वपूर्ण होती है। मनुष्य की स्वाभाविक अभिव्यक्ति उसकी स्वयं की मातृभाषा में ही होती है। बिना भाषा के हृदय की अभिव्यक्ति नहीं हो सकती। भाषा ही वह माध्यम

है, जिसके माध्यम से संचार प्रक्रिया सफल होती है। विकास का मूल केन्द्र भाषा ही है। बिना भाषा के सभ्यता एवं संस्कृति का विकास असंभव है।

मनुष्य के द्वारा प्रयुक्त वाणी सामने वाले के मन मस्तिष्क को प्रभावित करते है। भाषा में शब्द महत्वपूर्ण होते है। इसलिए शब्दों का प्रयोग करते समय आत्म–विचार कर लेना चाहिए। रहीम ने कहा है कि–"हिये तराजू तौल के, तौ मुख बाहर आनी। इसलिए बोलने से पहले व्यक्ति को हृदय रूपि तराजू में शब्द का मूल्याकंन कर लेना चाहिए। वाणी ही अच्छे और बुरे प्रभाव छोड़ते है। वाणी में सौम्यता और माधुर्यता का होना जरूरी है। मधुर वाणी सभी पसंद करते है। कहा गया है कि–

"कौवा किसका क्या हर लेता, कोयल किसको क्या दे देती।
केवल अपने मधुर वचन से, सबके मन को हर लेती।"

सफल संचार के लिए हमें अपने लक्षित समूह को ध्यान में रखकर संचार स्थापित करना चाहिए। जैसा विषय होगा उसी के अनुरूप भाषा एवं शब्दावली का चुनाव करना चाहिए, तभी संचार प्रभावशाली होगा। अभिव्यक्ति महत्वपूर्ण नहीं है बल्कि हम किस प्रकार से विषय वस्तु अभिव्यक्त करते है, यह ज्यादा महत्वपूर्ण है और उसी के अनुसार उसका प्रभाव पड़ते है।

मनुष्य के सभ्य समाज के विकास में भाषा और संचार का महत्वपूर्ण स्थान है। बिना भाषा के हम सभ्य समाज की परिकल्पना ही नहीं कर सकते। भाषा और संचार के विकास के साथ–साथ मानव सभ्यता एवं संस्कृति का विकास होता गया। मनुष्य का उठना–बैठना, चलना, खाना–पीना, सोना–जागना, पढना–लिखना, बोलना आदि जीवन की सभी गतिविधियां भाषा एवं संचार से जुड़ी हुई है। इसलिए मनुष्य को इन पर अच्छी पकड़ बनाने की आवश्यकता होती है। संचार स्थापित करने में भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। कुशल संचार स्थापित करने के लिए ही मनुष्य ने भाषा की उत्त्पत्ति किया, जिससे वह एक–दूसरे से विचारों का आदान प्रदान कर सकें। सभ्य समाज के निर्माण में भाषा और संचार का समान रूप से महत्व है। दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू है, इसलिए दोनों का समान रूप से महत्व है।

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची

1. भाषा विज्ञान–डॉ. भोलानाथ तिवारी
2. भाषा विज्ञान की भूमिका–आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा
3. भारतीय भाषा शास्त्रीय चिन्तन–स. विद्यानिवास मिश्र
4. भाषा रहस्य–श्यामसुन्दर दास
5. भाषा शास्त्र की रुपरेखा–उदय नारायण तिवारी
6. व्यतिरेकी भाषा विज्ञान– विजय राघव रेड्डी
7. सामान्य भाषा विज्ञान–बाबूराम सक्सेना
8. भारतीय भाषा शास्त्रीय चिन्तन की पीठिका–विद्यानिवास मिश्र
9. हिन्दी व्याकरण – कामता प्रसाद गुरु
10. मास कम्युनिकेशन – केवल जे. कुमार
11. सम्पूर्ण पत्रकारिता – डॉ.अर्जुन तिवारी
12. भारतीय आर्य भाषा और हिन्दी–सुनीतिकुमार
13. हिन्दी भाषा और साहित्य–डॉ.नरेश मिश्र
14. हिन्दी भाषा का इतिहास और स्वरूप–डॉ.राजमणि शर्मा
15. भारत की भाषा समस्या–रामविलास शर्मा